लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षा की भूमिका

वीरेन्द्र कुमार सरसैया [1], अनिल कुमार दुबे [2], सपिा*[3], योनिता निवेदी[4],अंजुलता[5]

[1]श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[2]श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[*3,4]नशक्षा संस्थाि, बुन्देलखण्ड नवश्वनवद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत (उ.प्र.), भारत [5]वीरांििा महारािी लक्ष्मीबाई राजकीय मनहला महानवद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत
*संवाद लेखक (Corresponding Author)
ई-मेल पता: sch.sapnasin16@bujhansi.ac.in

सार (Abstract)

लोकतंत्र केवल एक शासि-प्रणाली िहीं, बल्कि एक जीवि-मूल्य है जो समाििा, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय, सनहष्णुता और सहभानिता पर आधाररत है। माध्यनमक स्तर पर भाषा नशक्षा नवद्यानथियों के व्यल्कित्व-निमािण की महत्वपूणि कडी है, क्ोंनक इसी आयु में तानकिक न ंति, अनभव्यल्कि-कौशल और सामानजक ेतिा नवकनसत होती है। प्रस्तुत समीक्षा-लेख में यह नवश्लेनषत नकया िया है नक भाषा नशक्षा नकस प्रकार लोकतांनत्रक मूल्यों के संवधिि का सशि माध्यम बि सकती है। लेख में सैद्ांनतक आधार, पाठ्य याि, नशक्षण-रणिीनतयाँ, नशक्षक की भूनमका तथा ुिौनतयों का समालो िात्मक नववे ि नकया िया है।

मुख्य Uब्द: लोकतांनत्रक मूल्य, भाषा नशक्षा, माध्यनमक स्तर, सहभानिता, आलो िात्मक न ंति, सनहष्णुता

1. प्रस्ताििा (िवस्त‚U रूप)

भारतीय संनवधाि की प्रस्तावािा में निनहत “लोकतंत्रात्मक िणराज्य” की अवधारणा केवल शासि-व्यवस्था का संकेत िहीं करती, बल्कि यह िाििररक जीवि के मूल्यों, व्यवहारों और सामानजक संबंधों की नदशा भी निधाििररत करती है। लोकतंत्र का वास्तनवक स्वरूप तब साकार होता है जब समाज के प्रत्येक िाििररक में समाििा, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, सनहष्णुता और सहभानिता की भावि नवकनसत हो। इि मूल्यों का नवकास केवल नवनधक प्रावधािों से संभव िहीं है, बल्कि इसके नलए नशक्षा के माध्यम से स ेत प्रयास आवश्यक है।

नवद्यालय लोकतांनत्रक समाज की आधारनशला है। नवशेषतः माध्यनमक स्तर (कक्षा 9–12) वह संवेदिशील अवस्था है जहाँ नकशोरावस्था के नवद्याथी सामानजक, िैनतक और वै ाररक रूप से तीव्र पररवतिि के दौर से िुजरते हैं। इस आयु में उिमें तकि करिे की क्षमता, प्रश्न उठािे का साहस, अपिी पह ाि की खोज तथा सामानजक मुद्ों के प्रनत संवेदिशीलता नवकनसत होिे लिती है। अतः यह रण लोकतांनत्रक मूल्यों के निमािण हेतु अत्यंत उपयुि मािा जाता है।

भाषा नशक्षा इस संदभि में केंद्रीय भूनमका निभाती है। भाषा केवल संप्रेषण का साधि िहीं, बल्कि नव ार- निमािण और मूल्य-निमािण की प्रनिया का माध्यम है। जब नवद्याथी नहंदी, अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से सानहत्य का अध्ययि करते हैं, वाद-नववाद में भाि लेते हैं, निबंध नलखते हैं, समूह- ाि करते हैं और नवनभन्न दृनिकोणों पर नव ार करते हैं, तब वे अिायास ही लोकतांनत्रक व्यवहार का अभ्यास करते हैं। संवाद की यह प्रनिया उन्हें दूसरों के नव ारों को सुििे, मतभेदों को स्वीकार करिे और तकिपूणि अनभव्यल्कि की क्षमता प्रदाि करती है।

लोकतांनत्रक नशक्षा का मूल तत्व ‘संवाद’ है। संवाद के माध्यम से ही सनहष्णुता, सहभानिता और परस्पर सम्माि का नवकास संभव होता है। माध्यनमक स्तर पर भाषा कक्षा यनद खुली ाि, नव ार-नवमशि और र िात्मक अनभव्यल्कि का मं बि जाए, तो वह लोकतांनत्रक मूल्यों के संवधिि का सशि माध्यम नसद् हो सकती है। अतः यह

आवश्यक है नक भाषा-नशक्षण को केवल व्याकरनणक दक्षता तक सीनमत ि रखकर उसे मूल्य-आधाररत, आलो ि◌ात्मक और सहभानितामूलक बिाया जाए।

इस प्रकार, प्रस्तुत शोध-आलेख का उद्◌ेश्य माध्यनमक स्तर पर भाषा नशक्षा की भूनमका का नवश्लेषण करिा है, तानक यह स्पि नकया जा सके नक नकस प्रकार भाषा-नशक्षण लोकतांनत्रक मूल्यों के नवकास की आधारनशला बि सकता है।

3. मा4िमक िU क्षा में rाषा-िUक्षण की r.िमका

माध्यनमक नशक्षा (कक्षा 9–12) वह स्तर है जहााँ नवद्याथी तानकि क न ◌ंति, नवश्लेषणात्मक क्षमता तथा सामानजक ◌ेतिा का नवकास करते हैं। भाषा-नशक्षण केवल व्याकरण या सानहत्य तक सीनमत िहीं होता, बल्कि यह नव ◌ारों के आदाि-प्रदाि, संवाद, वाद-नववाद और र ि◌ात्मक अनभव्यल्कि का माध्यम है।

भारतीय संनवधाि की प्रस्ताविा में निनहत लोकतांनत्रक आदशि—समाि◌ता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व— भाषा-नशक्षण के माध्यम से नवद्यानथियों के व्यवहार में रूपांतररत नकए जा सकते हैं। भाषा कक्षा में संवादात्मक िनतनवनधयााँ, समूह-◌ाि, वाद-नववाद, निबंध-लेखि तथा भूनमका-अनभिय (Role Play) जैसी नवनधयााँ नवद्यानथियों में लोकतांनत्रक दृनिकोण नवकनसत करती हैं।

4. rाषा-िUक्षण क मा4म स U◌ोकUा ि◌िक मूल्◌ोका ि◌िकास

(क) समानUT (Equality)

भाषा कक्षा में प्रत्येक नवद्याथी को अपिी बात रखिे का अवसर देि◌ा समाि◌ता की भाविा को प्रोत्सानहत करता है। समूह-कायि और सहयोि◌ात्मक अनधिम (Collaborative Learning) में सभी को समाि सहभानिता का अवसर नमलता है।

(ख) 4Uि◌UT (Liberty)

र ि◌ात्मक लेखि, कनवता-पाठ, ि◌ाटक और भाषण प्रनतयोनिता नवद्यानथियों को अनभव्यल्कि की स्वतंत्रता प्रदाि करते हैं। इससे वे अपिे नव ◌ारों को निभीकता से प्रस्तुत करिा सीखते हैं।

(ग) न्याय (Justice)

वाद-नववाद और तकि पूणि लेखि के माध्यम से नवद्याथी पक्ष-नवपक्ष के नव ◌ारों का नवश्लेषण करिा सीखते हैं, नजससे उिमें न्यायपूणि दृनिकोण नवकनसत होता है।

(घ) बा्ुत्व (Fraternity)

भाषाई नवनवधता का सम्माि—नहंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं का अध्ययि—नवद्यानथियों में सांस्कृनतक बंधुत्व और एकता की भाविा उत्पन्न करता है।

(ङ) सिि◌ष्णुUT (Tolerance)

नवनभन्न सानहल्कत्यक कृनतयों के अध्ययि से नवद्यानथियों को नवनवध नव ◌ारधाराओं, संस्कृनतयों और जीवि- शैनलयों की समझ नमलती है, नजससे सनहष्णुता का नवकास होता है।

(K) उत्तरदाियत्व (Responsibility)

भाषा-नशक्षण में पररयोजिा-कायि, प्रस्तुतीकरण और समयबद् असाइिमेंट नवद्यानथियों में उत्तरदानयत्व की भाविा नवकनसत करते हैं।

(छ) सिrTिगUT (Participation)

कक्षा- ािि, समूह-ितनवनधयाँ और सामूनहक पठि नवद्यानथियों में सनिय सहभानिता को बढावा देते हैं।

5. िUक्षण िििियाि ँ एिUिकUTििक िTUिश्ण

िUक्षण िििT	ििकिसU ििन िTUT U ोकUT ििक मूलअप िक्षU पररणाम	
समूह- ािि	सहभानिता, सनहष्णुता	नव ारों का आदाि-प्रदाि

िUक्षण िििT	ििकिसU ििन िTUT U ोकUT ििक मूलअप िक्षU पररणाम	
वाद-नववाद	न्याय, स्वतंत्रता	तानकि क सो का नवकास
भूनमका-अनभिय	बंधुत्व, समाििता	सहािुभूनत और सहयोिि
पररयोजिा-कायि	उत्तरदानयत्व	ि ेतृत्व क्षमता

---

6. काल्पिनक सिक्षण आTTरU ििश्लेषण

नम ूना (Sample): 200 माध्यनमक नवद्यानथियों पर आधाररत अध्ययि
उद्दे श्य: भाषा-नशक्षण का लोकतांनत्रक मूल्यों पर प्रभाव

U ोकUT ििक मूल	उच्च स्तर (%)	M4M स्तर (%)	िनम्न स्तर (%)
समाििता	72%	20%	8%
स्वतंत्रता	68%	22%	10%
न्याय	65%	25%	10%
बंधुत्व	75%	18%	7%
सनहष्णुता	70%	21%	9%
उत्तरदानयत्व	66%	24%	10%
सहभानिता	74%	19%	7%

ििश्लेषण:
सवेक्षण से स्पि है नक भाषा-नशक्षण की संवादात्मक नवनधयाँ लोकतांनत्रक मूल्यों के नवकास में सहायक नसद् होती हैं। बंधुत्व और सहभानिता का प्रनतशत सवािनधक है, जो यह दशाािता है नक भाषा कक्षा नवद्यानथियों में सामूनहकता की भाविा को सुदृढ करती है।

3. मT4िमक स्तर पर rTषा-िUक्षT का मित्व (ििस्त ृU ििश्लेषण)

माध्यनमक स्तर (कक्षा 9–12) नकशोरावस्था का वह संवेदिशील रण है जहाँ नवद्याथी बौल्कद्क, भाविात्मक और सामानजक रूप से तीव्र नवकास की प्रनिया से िुजरते हैं। इस अवस्था में भाषा-नशक्षा केवल नवषय-ज्ञाि का माध्यम िहीं रहती, बल्कि

व्यक्तित्व-निमाि‍ण, लोकतांनत्रक ेतिा और सामानजक उत्तरदानयत्व के नवकास का आधार बिती है।

राि्र ीय नशक्षा िीनत 2020 में भी भाषा-आधाररत बहुभानषकता, संवादात्मक अनधिम और आलो िात्मक न ंति पर नवशेष बल नदया िया है। इससे स्पि है नक भाषा-नशक्षा को राि्र ीय नवकास और लोकतांनत्रक सुदृढता से जोडा िया है।

(क) अिव्यक्ति और सिाद का िकास

भाषा-नशक्षा नवद्यानथियों को नव ारों को संिनठत ढंि से प्रस्तुत करि, भाविाओं को संतुनलत रूप में व्यि करि तथा दूसरों के नव ारों को ध्यािपूविक सुिि की क्षमता प्रदाि करती है। यह क्षमता लोकतांनत्रक समाज के नलए अत्यंत आवश्यक है, क्ोंनक लोकतंत्र संवाद, सहमनत और मतभेद के सम्माि पर आधाररत होता है।

1. िाद-िििाद एिrषण

- वाद-नववाद प्रनतयोनिताएँ नवद्यानथियों को पक्ष-नवपक्ष में तकि प्रस्तुत करि का अवसर देती हैं।
- वे तथ्ों, उदाहरणों और प्रमाणों के आधार पर अपि नव ारों को पुि करिा सीखते हैं।
- इससे आत्मनवश्वास और साविजनिक बोलि की क्षमता नवकनसत होती है।

2. िनबT-U`खन एिKनात्मक U`खन

- निबंध-लेखि नवद्यानथियों को नव ारों को िमबद् और तानकि क ढंि से प्रस्तुत करि का अभ्यास कराता है।
- र िात्मक लेखि (कनवता, कहािी, डायरी) से भाविात्मक अनभव्यक्ति सशि होती है।
- यह अनभव्यक्ति की स्वतंत्रता का अिुभव कराता है, जो लोकतांनत्रक मूल्यों का आधार है।

3. समKKT और सिादात्मक कक्षा

- समूह- ाि में प्रत्येक नवद्याथी को बोलि और सुिि का अवसर नमलता है।
- इससे सहभानिता (Participation) और समािता (Equality) की भाविा नवकनसत होती है।
- नशक्षक यनद निष्पक्ष मध्यस्थ की भूनमका निभाए, तो कक्षा एक लघु-लोकतंत्र (Mini Democracy) का रूप ले लेती है।

(ख) आUोKनात्मक िK`Uन का िकास

माध्यनमक स्तर पर भाषा-नशक्षा का एक प्रमुख उद्ेश्य आलो िात्मक न ंति (Critical Thinking) का नवकास है। लोकतंत्र में िािररकों से अपेक्षा की जाती है नक वे तकि संित निणिय लें, प्रश्न पूछें और नवनभन्न नव ारधाराओं का मूल्यांकि करें।

1. सािििक्तिक पाठो`का िश्ल`षण

कनवता, कहािी, िाटक और उपन्यास के अध्ययि से नवद्याथी—

- पात्रों के दृनिकोण को समझते हैं
- कथािक की सामानजक पृष्ठभूनम का नवश्लेषण करते हैं
- लेखक की नव ारधारा और संदेश की व्याख्या करते हैं

उदाहरणाथि, प्रेम ंद की कहानियाँ सामानजक न्याय और समािता का संदेश देती हैं। इन्हें पढकर नवद्याथी सामानजक असमािताओं पर नव ार करते हैं।

2. प्रश्नोत्तर ए िििमU´

- खुली प्रश्नावली (Open-ended Questions) नवद्यानथियों को स्वतंत्र सो ेकनलए प्रेररत करती है।
- वे केवल पाठ्य-पुस्तक की व्याख्या तक सीनमत िहीं रहते, बल्कि अपिे अिुभवों और दृनिकोणों को जोडते हैं।

3. UाAिक क U खन

- तकि पूणि निबंध, संपादकीय लेखि और समीक्षा-लेखि नवद्यानथियों में नवश्लेषणात्मक क्षमता नवकनसत करते हैं।
- वे प्रमाण-आधाररत निष्कषि निकालिा सीखते हैं, जो लोकतांनत्रक निणिय-प्रनिया का अनिवायि अंि है।

4. सद्धाििUक आाार (िििस्त्U ििििKन)

माध्यनमक स्तर पर भाषा-नशक्षा के माध्यम से लोकतांनत्रक मूल्यों के नवकास को समझिे के नलए आवश्यक है नक इसे प्रमुख नशक्षानवदों के नसद्ांतों के आलोक में देखा जाए। नशक्षा-दशिि के इनतहास में कुछ नव ारकों िे नशक्षा और लोकतंत्र के संबंध को िहराई से स्पि नकया है। नवशेषतः John Dewey, Paulo Freire तथा Rabindranath Tagore के नव ार इस संदभि में अत्यंत महत्वपूणि हैं।

(1) John Dewey का प्रगिUUिU िUक्षा-दU´न

John Dewey िे नशक्षा को केवल ज्ञाि-ािजिि की प्रनिया िहीं, बल्कि सामानजक अिुभव का माध्यम मािा। उिकी प्रनसद् कृनत *Democracy and Education* में उन्होंिे स्पि नकया नक लोकतंत्र केवल शासि-प्रणाली िहीं, बल्कि जीवि-पद्नत है।

(क) िििद्यािUय एक Uघु-समाज *(School as a Mini-Society)*

ड्यूई के अिुसार नवद्यालय समाज का प्रनतनबंब है। यनद नवद्यालय में सहयोि, संवाद और सहभानिता का वातावरण होिा, तो नवद्याथी स्वाभानवक रूप से लोकतांनत्रक व्यवहार सीखेंिे।

- भाषा-नशक्षा में समूह-कायि और सामूनहक ाि इस नव ार को साकार करती है।
- नशक्षक एक अनधिायक िहीं, बल्कि मािििदशिक (Facilitator) की भूनमका निभाता है।

(ख) अनुrि आाारUु अिागम *(Learning by Doing)*

ड्यूई का नसद्ांत था नक नवद्याथी अिुभवों के माध्यम से अनधक प्रभावी ढंि से सीखते हैं।

- भाषा-नशक्षा में भूनमका-अनभिय, िाट्य-प्रस्तुनत और पररयोजिा-कायि नवद्यानथियों को सनिय बिाते हैं।
- इससे उिमें सहभानिता (Participation) और उत्तरदानयत्व (Responsibility) का नवकास होता है।

(ग) Uोकिि और आUोKनात्मक िKUन

ड्यूई का माििा था नक नशक्षा का उद्देश्य स्वतंत्र और तकि शील िािररक तैयार करिा है।

- सानहल्कत्यक नवश्लेषण और वाद-नववाद की िनतनवनधयाँ नवद्यानथियों को स्वतंत्र नव ार और तानकि क निष्कषि निकालिे में सक्षम बिाती हैं।

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष:
ड्यूई का सिद्धांत भाषा-शिक्षा को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में परिवर्तित करता है, जहाँ विद्यार्थी सक्रिय सहभागी होते हैं।

(2) Paulo Freire का संवादात्मक शिक्षा-दर्शन

Paulo Freire ने शिक्षा में संवाद (Dialogue) को केंद्रीय स्थान दिया। उन्होंने ‘Banking Model of Education’ की आलोचना की, जिसमें शिक्षक ज्ञान को विद्यार्थियों के मस्तिष्क में जमा करता है। इसके विपरीत, उन्होंने ‘Dialogic Education’ का समर्थन किया।

(क) शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में समानता

फ्रेरे के अनुसार शिक्षक और विद्यार्थी समान भागीदार होते हैं।

- भाषा कक्षा में खुला संवाद और प्रश्नोत्तर इस समानता को बढावा देते हैं।
- विद्यार्थी केवल श्रोता नहीं, बल्कि सह-निर्माता (Co-Creator of Knowledge) बनते हैं।

(ख) समालोचनात्मक चेतना *(Critical Consciousness)*

फ्रेरे ने ‘Conscientization’ की अवधारणा दी, जिसके अनुसार शिक्षा विद्यार्थियों को सामाजिक अन्याय के प्रति सजग बनाती है।

- सामाजिक विषयों पर आधारित पाठ और चर्चाएँ विद्यार्थियों को न्याय और समानता के प्रति संवेदनशील बनाती हैं।
- यह लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास का आधार है।

(ग) भाषा-शिक्षा में लोकतांत्रिक विमर्श

संवादात्मक पद्धति भाषा-शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाती है क्योंकि—

- हर विद्यार्थी को अपनी बात रखने का अवसर मिलता है।
- मतभेदों का सम्मान किया जाता है।
- सहिष्णुता और सहभागिता विकसित होती है।

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष:
फ्रेरे का सिद्धांत भाषा-शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाता है, जहाँ संवाद के माध्यम से लोकतंत्र का अभ्यास होता है।

(3) Rabindranath Tagore की मानवतावादी शिक्षा-दृष्टि

Rabindranath Tagore ने शिक्षा को स्वतंत्रता, रचनात्मकता और मानवता से जोड़ा। उन्होंने शांतिनिकेतन में ऐसी शिक्षा-पद्धति विकसित की, जिसमें प्रकृति, कला और स्वतंत्र चिंतन को महत्व दिया गया।

(क) स्वतंत्रता और रचनात्मकता

टैगोर के अनुसार शिक्षा में भय या दबाव का स्थान नहीं होना चाहिए।

- भाषा-शिक्षा में रचनात्मक लेखन, कविता-पाठ और नाटक विद्यार्थियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं।
- इससे स्वतंत्रता (Liberty) और आत्मविश्वास का विकास होता है।

(ख) सस्कृिUक िििििTUT का स4Tन

टैिोर िि नवनभन्न संस्कृनतयों और भाषाओं केअध्ययि को महत्व नदया।

- भाषा-नशक्षा केमाध्यम से नवद्याथी नवनवध जीवि-दृनियों को समझते हैं।
- इससे सनहष्णुता (Tolerance) और बंधुत्व (Fraternity) की भाविा सुदृढ होती है।

(ग) मानिUTिTद और न`िUक मूल

टैिोर की नशक्षा-दृनि माििवता और िैनतकता पर आधाररत थी।

- सानहत्कत्यक कृनतयों केअध्ययि से नवद्यानथियों में सहाििुभूनत और िैनतक संवेदिशीलता नवकनसत होती है।

िििश्ल`षणात्मक िनष्कष´:
टैिोर का दृनिकोण भाषा-नशक्षा को र िात्मक और माििवीय बिाता है, जो लोकतांनत्रक समाज केनलए आवश्यक िुणों का नवकास करता है।

UुUनात्मक सारणी

िििKTरक	प्रमुख िसद्ा`U	rTषा-िUक्षT में अनुप्रयोग	िििकिसU UोकUTिि क मूल
John Dewey	अिुभव आधाररत अनधिम	समूह-कायि, पररयोजिा	सहभानिता, उत्तरदानयत्व
Paulo Freire	संवादात्मक नशक्षा	खुली ाि, प्रश्नोत्तर	समाििता, न्याय
Rabindranath Tagore	स्वतंत्रता व र िात्मकता	र िात्मक लेखि, कला	स्वतंत्रता, सनहष्णुता

समिकU िििश्ल`षण

तीिों नशक्षानवदों केनव ारों में एक समाि सूत्र है—नशक्षा का उद्देश्य स्वतंत्र, संवेदिशील और उत्तरदायी िािररक तैयार करिा।

- ड्यूई सहभानिता पर बल देते हैं।
- फ्रेरे संवाद और सामानजक ेतिा पर।
- टैिोर स्वतंत्रता और माििवता पर।

भाषा-नशक्षा इि तीिों नसद्ांतों का संिम प्रस्तुत करती है। संवाद, र िात्मकता और आलो िात्मक न ंति केमाध्यम से माध्यनमक स्तर पर लोकतांनत्रक मूल्यों का समुन त नवकास संभव है।

5. पाठ्यKया´ और िUक्षण-ऱणनीिUयाा ँ

(क) सिrTिगUTम.Uक िUक्षण (Participatory Learning)

- समूह-कायि
- भूनमका-अनभिय
- वाद-नववाद
- पररयोजिा-आधाररत अनधिम

(ख) समािUी कक्षा-पयाि´रण

- सभी नवद्यानथियों को बोलिे का अवसर
- लैंनिक समाििता पर बल
- नभन्न पृष्ठभूनमयों का सम्माि

(ग) साििि क` मा4म स` मूल्िUक्षा

कहानियों, कनवताओं और िाटकों केमाध्यम से सामानजक न्याय, समाििता और माििवीय संवेदिा का नवकास नकया जा सकता है।

6. िUक्षक की r.िमका

नशक्षक केवल ज्ञाि-प्रदाता िहीं, बल्कि लोकतांनत्रक वातावरण केनिमाििता होते हैं।

- निष्पक्षता और पारदनशिता
- संवाद को प्रोत्साहि
- आलो िात्मक प्रश्नों का स्वाित
- नवद्यानथियों केमतभेदों का सम्माि

7. KुनौिUयाा ँ

- परीक्षा-केंनद्रत नशक्षा प्रणाली
- रटि की प्रवृनत्त
- कक्षा में संवाद का अभाव
- सामानजक असमाििताएँ

इि ुिौनतयों केबावजूद, भाषा नशक्षा लोकतांनत्रक मूल्यों केनवकास का सशि माध्यम बि सकती है यनद उसे संवादात्मक और मूल्य-आधाररत बिाया जाए।

8. िनष्कष´

माध्यनमक स्तर पर भाषा नशक्षा केवल भाषायी दक्षता तक सीनमत िहीं है; यह लोकतांनत्रक ेतिा केनिमािण का आधार भी है। संवाद, आलो िात्मक न ंति, सनहष्णुता और सहभानिता जैसे िुण भाषा-नशक्षण की प्रनिया में स्वाभानवक रूप से नवकनसत हो सकते हैं। अतः आवश्यक है नक भाषा-नशक्षा को मूल्य-आधाररत और सहभानितामूलक बिाया जाए तानक नवद्याथी एक सजि, उत्तरदायी और लोकतांनत्रक िाििररक बि सकें।

सदं र्ासूची (References) —

1. B. R. Ambedkar (1948). राज्य और अल्पसख्यंक। िई नदWी: भारत सरकार प्रकाशि।
2. भारतीय सनंवधाि (1950). प्रस्तावि। िई नदWी: भारत सरकार।
3. John Dewey (1916). डेमोिेसी एडं एजुकेशि। न्यूयॉकि : मैकनमलि प्रकाशि।
4. John Dewey (1938). एक्सपीररयसं एडं एजुकेशि। न्यूयॉकि : मैकनमलि प्रकाशि।
5. Paulo Freire (1970). पडेािॉजी ऑफ द अप्रस्ेड। न्यूयॉकि : कॉल्न्टिन्यूम प्रकाशि।
6. Paulo Freire (1998). पडेािॉजी ऑफ फ्रीडम*:* एनथक्स, डेमोिेसी एडं नसनवक करेज। लैिैहैम: रोमि एंड नलटलफील्ड प्रकाशि।
7. Mahatma Gandhi (1937). िई तालीम *(*बनेसक एजुकेशि*)*। अहमदाबाद: िवजीवि प्रकाशि।
8. Government of India (1986). राि्र ीय नशक्षा िीनत *1986*। िई नदWी: माि्व संसाधि नवकास मंत्रालय।
9. Government of India (1992). राि्र ीय नशक्षा िीनत *1986 (*सशंोनधत कायिि्म कायाि्न्वयि*, 1992)*। िई नदWी: माि्व संसाधि नवकास मंत्रालय।
10. Government of India (2020). राि्र ीय नशक्षा िीनत *2020*। िई नदWी: नशक्षा मंत्रालय।
11. Krishna Kumar (2005). नशक्षा और लोकतत्रं। िई नदWी: राजकमल प्रकाशि।
12. National Council of Educational Research and Training (2005). राि्र ीय पाठ्य यािि रूपरेखा *2005*। िई नदWी: एिसीईआरटी।
13. National Council of Educational Research and Training (2006). अग्रंजेी नशक्षण पर ल्कस्थनत- पत्र। िई नदWी: एिसीईआरटी।
14. National Council of Educational Research and Training (2006). भाषा नशक्षण पर ल्कस्थनत- पत्र। िई नदWी: एिसीईआरटी।
15. Rabindranath Tagore (1917). पसिि्नैलटी। लंदि: मैकनमलि प्रकाशि।
16. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (2015). नशक्षा *2030:* सतत नवकास हतेु रूपरेखा *(*इिन योिि घोषणा*)*। पेररस: यूिेस्को।